

सलोकु ॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह  
बिनसि जाइ अहंमेव ॥  
नानक प्रभ सरणागती  
करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥

असटपदी ॥

जिह प्रसादि छतीह अंम्रित खाहि ॥  
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥  
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥  
तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥  
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥  
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥  
जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥  
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥  
जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥  
नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग  
॥१॥

जिह प्रसादि पाट पटंबर हटावहि ॥  
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥  
जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥  
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥  
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥  
मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥  
जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥  
मन सदा धिआइ केवल पारब्रह्म ॥  
प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥  
नानक पति सेती घरि जावहि  
॥२॥

जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥  
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥  
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥  
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥  
जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥  
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥  
जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥  
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥  
जिह प्रसादि पाई दुलभ देह ॥  
नानक ता की भगति करेह

॥३॥

जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥  
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥  
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥  
मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥  
जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥  
राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥  
जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥  
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥  
तिसहि धिआई जो एक अलखै ॥  
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै

॥४॥

जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥  
मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥  
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥  
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥  
जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥  
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥  
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥  
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥  
जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥  
गुर प्रसादि नानक जसु कहै

॥५॥

जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥  
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥  
जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना ॥  
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥  
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥  
जिह प्रसादि संपूरन फलहि ॥  
जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥  
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥  
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥  
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु  
॥६॥

जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥  
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥  
जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥  
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥  
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥  
तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥  
जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥  
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥  
जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥  
नानक जापु जपै जपु सोइ  
॥७॥



आपि जपाए जपै सो नाउ ॥  
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥  
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥  
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥  
प्रभ सुप्रसन्न बसै मनि सोइ ॥  
प्रभ दइआ ते मति उत्तम होइ ॥  
सख निधान प्रभ तेरी मइआ ॥  
आपहु कछू न किनहू लइआ ॥  
जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥  
नानक इन कै कछू न हाथ  
॥८॥६॥